केन्द्रीय विद्यालय चनैनी

ई.पत्रिका २०१७-१८

हिंदी

विभाग

अनुक्रमाणिका

क्र०स०	विषय	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	सम्पादकीय	शीतल शर्मा]पी [टी हिंदी.जी.	4
2	आधुनिक शिक्षा और मानवीय मूल्य	शीतल शर्मा]पी [टी हिंदी.जी.	5
3	गुरु को प्रणाम	विन्की भगत [संगणक अध्यापक]	6
4	सुभाषितानि	वन्दना देवी [टी संस्कृत.जी.टी]	7
5	इन्हें अपनाएँ जीवन निखारें	रोशनी खजुरिया कक्षा दसवीं-	8
6	मेरे माता पिता जी -	पीयूष वर्मा कक्षा- छठी	9
7	माँ	सिमरन बाली- छठी	10
8	भ्रष्टाचार	अरुण सिंह कक्षा -छठी	11
9	किसकी आँखों में क्या है	अमित सिंह क6क्षा -आठवीं	12
10	मैं छवि हूँ	रोहित शर्मा कक्षा -दसवीं	13
11	आज़ादी	कृष कक्षा -दसवीं	14
12	भारत देश महान	पल्ल्वी देवी कक्षा -दसवीं	15
13	एक बचपन का ज़माना था	करुण शर्मा कक्षा -छठी	16
14	केन्द्रीय विद्यालय मेरा स्कूल	युद्धवीर कक्षा आठवीं	17
15	बेटी बचाओ	तनीशा कटोच कक्षा -आठवीं	18
16	राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन सम्बन्धी प्रमुख नारे वचन	विन्की भगत [संगणक अध्यापक]	19

सम्पादकीय

प्रिय पाठकगण ,

शिक्षा का उद्देश्य छात्रों का सर्वांगींण विकास है | शिक्षा ही छात्रों को साहित्य सृजन की शक्ति प्रदान करती है | साहित्य सृजन की क्षमता का परिचय विद्यालय पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आप सबके सम्मुख प्रस्तुत है |

इस सृष्टि में हर पल, हर क्षण कुछ न कुछ सृजित हो रहा है | इस सृष्टि के रचनाकार ने प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी कला को सृजित करने की शक्ति प्रदान की है| जैसे बहार आने पर सूखी टहनियों पर अंकुर स्वत: ही प्रस्फुटित होने लगते हैं ,उसी प्रकार परिपक्व अनुभवों से मौलिक रचनाएँ स्वत: ही प्रस्फुटित होने लगती हैं |

हिंदी भाषा ही सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँध सकती है | इसमें ही हमारी संस्कृति निहित है| आज समाज में फैले भ्रष्टाचार ,हिंसा ,अन्धविश्वास, सांप्रदायिकता आदि को हिंदी भाषा के द्वारा ही दूर किया जा सकता है , साथ ही राष्ट्रप्रेम समाज-सुधार व नवजागरण का संदेश भी इसी भाषा में निहित एवं समाहित है

आशा है विद्यार्थियों का सामूहिक प्रयास आपको अवश्य पसंद आयेगा |

- शीतल शर्मा

पी.जी.टी हिंदी

आधुनिक शिक्षा और मानवीय मूल्य

आधुनिक शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं | शिक्षा बहुमुखी और चहुमुखी विकसित हो रही है, परन्तु विकास की इस चकाचौंध में हम कहीं भटक गये हैं, कहीं कुछ ऐसा पीछे छूट गया है , जिसकी भरपाई नहीं हो पा रही है और शायद यही वजह होने के बावजूद हम जीवन में पिछड़ते जा रहे हैं, जीवन से विमुख हो गये हैं | साधनों की अनगिनत चाहत और उनसे सुख प्राप्त करने की कसक इतनी बढ़ गई है कि तड़पन और मानसिक अशांति के सिवाय कुछ नहीं मिल रहा है | आधुनिक समाज की सबसे बड़ी समस्या है कि शिक्षा विद्याविहीन हो गई है, अर्थात् शिक्षा का प्राण कहे जाने वाले नैतिक मूल्यों का घोर अपमान हुआ है| मूल्यहीन शिक्षा का चेहरा बहुत भयानक है क्योंकि इसमें सिर्फ तकनीकी जानकारी होती है परन्तु दिशा का अभाव होता है, उच्चादर्श की कमी होती है |

इस समस्या का समाधान कुछ इस प्रकार किया जा सकता है यदि पूरे पाठ्यक्रम का निर्माण कुछ इस प्रकार से हो जिसमें की कुछ मुख्य विषय नैतिक मूल्यों तथा हमारे जीवन से सम्बन्धित हो जो हमारे जीवन को कुछ लाभ व दिशा प्रदान कर सकें |
इसके साथ ही प्राथमिक पाठशाला से विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम तक सभी में जीवन जीने की कला का समावेश होना चाहिए |आज ऐसी शिक्षा की जरूरत है जो हमारे अंदर जीवन की समझ पैदा करे और जो विचारों में श्रेष्ठता तथा भावना में उत्कृष्टता लाये | शिक्षा से सचमुच क्रांतिकारी परिवर्तन लाकर सफलता पाई जा सकती है ,इसी शिक्षा से फिर कई अरविंदो,सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी ,विवेकानंद और हरिश्चंद्र उत्पन्न हो सकते है जिनकी आज भारत को बहुत ज़रूरत है |

- शीतल शर्मा

पी.जी.टी हिंदी

गुरु को प्रणाम

गुरु को सौ-सौ बार प्रणाम ,
जिसने दी मुझे विद्या , पढ़ाई |
मन में ज्ञान की ज्योति जलाई ,
भले-बुरे का ज्ञान कराया |
देश -भक्ति का पाठ पढ़ाया ,
अनुशासन का पालन करना सिखाया |
उन्नति की राह पर चलना सिखाया ,
निर्बल के प्रति प्रेम करना समझाया |
हर वक्त ईश्वर को प्रणाम करना सिखाया ,
मेरे उस गुरु को सौ -सौ बार प्रणाम |

विन्की भगत
संगणक अध्यापक

सुभाषितानि

आरभेतैव कर्माणि श्रांत: श्रांत : पुन: पुन:

कर्माणयारभमाणम हि पुरुष श्रीनिर्वेषते

भावार्थ:- बार -बार थकने पर भी आरम्भ किये हुए कार्य की समाप्ति हेतु पुन : पुनः प्रयास करना चाहिए, इस प्रकार निरंतर परिश्रम करने वाले मनुष्य को ही विजयश्री की प्राप्ति होती है|

अतिपरिचयादवज्ञा सततगमनादनादरो भवति

मलये भिल्लपुरुध्री चन्दनतरुकाषठमिन्धन्म कुरुते

भावार्थ:- अधिक परिचय होने पर मनुष्य का सम्मान घटने लगता है तथा किसी के घर द्वार पर अधिक जाने से अनादर होने लगता है जैसे मलय पर्वत पर रहने वाली भील स्त्री चन्दन की लकड़ी को भी चूल्हे में ईंधन के रूप में प्रयोग करती है क्योंकि मलय पर्वत पर चन्दन बहुतायत में है , अत: मनुष्य को सम्बन्धों में एक निश्चित दूरी बनाये रखते हुए अपने सम्मान की रक्षा करनी चाहिए |

आयुर्वर्षशतं नृणाम परिमितं रात्रो तदर्धगतं

तस्याधस्य परस्य चार्धमपरम् बालत्ववृद्धत्वयो :|

शेष व्याधि वियोगदुःखसहितम् सेवादिभिनिर्यते

जीवे वारितरंगचंचलपरे सौख्यं कुत: प्राणिनाम् ||

भावार्थ:-मनुष्य को अधिकाधिक सौ वर्ष का आयुकाल प्राप्त होता है ,जिसमें से आधा रात्रि (अर्थात् सोने)में चला जाता है और अवशिष्ट का आधा बाल्यावस्था तथा वृद्धा अवस्था का होता है | इस प्रकार जो थोड़ा बहुत जीवनकाल बचता है उसमें भी रोग , सगे -सम्बन्धियों का वियोग दुःख तथा सेवा करते हुए बिताना पड़ता है ,अत: इस पानी के बुलबुले के समान क्षण भंगुर जीवन में मनुष्य मात्र को सुख कहाँ मिलता है ? अत: मनुष्य को परोपकार का आश्रय लेना चाहिए |

वन्दना देवी [टी.जी.टी. संस्कृत]

इन्हें अपनाएँ - जीवन निखारें

1. पुस्तकों को अपना मित्र बनायें | ये सच्ची मित्र हैं जो ज्ञान बढ़ाती हैं और खाली समय व्यतीत करने में आपकी मदद करती है |

2. टी .वी पर अधिक समय व्यर्थ न करें | इससे आँखें खराब होती हैं और शरीर में सुस्ती पनपने लगती है |

3. असफल होने पर शर्माए नहीं ,असफलता से शिक्षा मिलती है |

4. बोलते समय सोचकर बोलें | कहीं ऐसा न हो कि बिना सोचे बोले गए शब्द किसी के लिए मानसिक ठेस का कारण बन जाए |

5. दूसरों से अधिक आशाएँ न रखें क्योंकि आशाएँ कभी पूरी नहीं होती |जितनी पूरी करो बढ़ती ही जाती हैं | आशा पूरी न होने पर मन को समझाएँ |

6. कोशिश करें की दूसरों को पूरी खुशी और मदद दें |

7. जीवन में मित्रों से सच्चा प्यार करें |

8. मामूली बातों के कारण दोस्ती एकदम न खत्म करें |

रोशनी खजुरिया कक्षा-दसवीं

मेरे माता - पिता जी

घर मेरा एक बरगद है,
मेरे पापा जिसकी जड़ हैं,
घनी छाँव है मेरी माँ,
यही है मेरा आसमान |

पापा का है प्यार अनोखा,
जैसे शीतल हवा का झोंका,
माँ की ममता सबसे प्यारी,
सबसे सुंदर सबसे न्यारी |

हाथ पकड़ चलना सिखलाते,
पापा हमको खूब घूमाते,
माँ मल्हम बनकर लग जाती,
जब भी हमको चोट सताती |

माँ पापा बिन दुनिया सूनी,
जैसे तपती आग की धूनी,
माँ ममता की धारा है,
पिता जीने का सहारा है |

माँ तो जन्नत का फूल है,
प्यार करना उसका उसूल है,
दुनिया की मोहब्बत फिजूल है,
माँ की हर दुआ कबूल है |

माँ को नाराज करना,
इंसान तेरी भूल है,
माँ के कदमों की मिट्टी,
जन्नत की धूल है |

नाम - पीयूष वर्मा
कक्षा - छठी

माँ

धरती पे ईश्वर की तलाश है,
मालिक तेरा बन्दा कितना निराश है,
क्यों खोजता है इंसान ईश्वर को,

जबकि तेरे दुसरे रूप में
माँ उसके इतने पास है |

पूछता है जब कोई दुनिया में, मोहब्बत है कहाँ ?
मुस्कुरा देता हूँ मैं, और याद आ जाती है माँ |

हर पल में ख़ुशी देती है माँ,
अपनी जिंदगी से जीवन देती है माँ,

भगवान क्या है ? माँ की पूजा करो जनाब,
क्योंकि भगवान को भी जन्म देती है माँ |

नाम - सिमरन बाली
कक्षा - छठी

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार हमारी राष्ट्रीय समस्या है | ऐसे व्यक्ति जो अपने कर्तव्यों की अवहेलना कर निजी स्वार्थ में लिप्त रहते हैं , 'भ्रष्टाचारी' कहलाते हैं | आज हमारे देश में भ्रष्टाचार की जड़ें बहुत गहराई तक समाहित है | जब तक इस राष्ट्रीय समस्या का स्थायी निदान नहीं मिलता, तब तक कोई देश या राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता | यह पथ-पथ पर प्रगति की राह का अवरोधक बनता रहेगा | भ्रष्टाचार के कारणों का हम गहन अध्यन करें तो हम देखते हैं कि इसके मूल में अनेक कारण हैं जो भ्रष्टाचार के लिए कारण बनते हैं | सबसे प्रमुख कारण है- आदमी में असंतोष की प्रवृति | भ्रष्टाचार के समाधान के लिए आवश्यक है कि भ्रष्टाचार संबंधी नियम और भी सख्त हों तथा भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों को कड़ी से कड़ी सजा मिले |

नाम - अरुण सिंह
कक्षा - छठी

किसकी आँखों में क्या है

माँ की आँखों में	ममता
पिता की आँखों में	कर्तव्य
बहन की आँखों में	स्नेह
भाई की आँखों में	प्यार
गुरु की आँखों में	ज्ञान
विद्यार्थी की आँखों में	जिज्ञासा
अमीर की आँखों में	घमंड
गरीब की आँखों में	आशा
मित्र की आँखों में	सहयोग
दुश्मन की आँखों में	प्रतिशोध
वैज्ञानिक की आँखों में	खोज
ईश्वर की आँखों में	दया

अमित सिंह
कक्षा- आठवीं

मैं छवि हूँ

अपने माँ पापा की परछाई |
बेटी हूँ उनकी , उनकी जान में हूँ समाई !!
खुश है वो मुझे पाकर |
मैंने भी उनसे प्रीत लगायी !!
क्योंकि मैं छवि हूँ उनकी , मैं उनकी हूँ परछाई !!
बेटी के जन्म पर क्यों होते हैं दुखी कुछ माँ पापा !
मैं अभी तक यह न समझ पाई
क्योंकि छवि हूँ मैं अपने माँ पापा की मैं हूँ उनकी परछाई !
इस दुनिया में मेरी माँ जैसी माँ नहीं कोई भी
पर मेरे पापा तो उनसे भी ऊपर है यह बात मेरी समझ में है आई-
क्यों होते हैं वो माँ पापा दुखी क्यों होते हैं वो माँ पापा दुखी जिनके घर में बेटी होती है लक्ष्मी रूप लेके आई
क्यों होते हैं वो माँ पापा सुखी जिनके घर में न हो कोई बेटी सिर्फ होते है दो भाई|
मैं भी हूँ बेटी अपने माँ पापा की लाडली हूँ घर की रौनक हूँ , जैसे पायल की खनक हूँ जैसे सुर का ताल हूँ
क्योंकि छवि हूँ मैं अपने माँ पापा की मैं हूँ उनकी परछाई !
मेरे चुप होने से मेरे घर में सब हो जाते हैं खामोश
फिर केसे कर जाते है लोग अपनी बेटियों को सदा क लिए खामोश
मेरे रोने पे मेरे आंसू नहीं गिरने देते माँ पापा ज़मीन पर , फिर केसे छोड़ आते हैं लोग अपनी बेटियों को नाले में कचरे के ढेर में , क्यों बात मैं यह समझ नही पाई
क्योंकि छवि हूँ मैं अपने माँ पापा की मैं हूँ उनकी परछाई !

रोहित शर्मा
कक्षा - दसवीं

आज़ादी

रोती सदा गुलामी लेकिन हँसती है आज़ादी
ह्रदय- ह्रदय में प्राण-प्राण में बसती है आज़ादी|
आँगन- आँगन खुशी बिखेरा करती है आज़ादी
मर जाते है व्यक्ति लेकिन मरती नै है आज़ादी |
आज़ादी गाया करती है पीड़ा - मुक्त तराना,
आज़ादी का मतलब है तकदीरें नयी बनाना |
आज़ादी है खुलना - खिलना अपना देश सजाना
आज़ादी से बढ़िया सुन्दर सुन्दर कोई नहीं खज़ाना |
सबसे कुर्बानी का हिस्सा माँग रही है आज़ादी
भगत सिंह का नूतन किस्सा माँग रही है आज़ादी
आज़ादी कहती है आओ , आओ मुझे बचा लो
एक सूत्र में बंधो- बंधाओ , आओ मुझे बचा लो |

कृष
कक्षा - दसवीं

भारत देश महान

हमारा देश विश्व का प्राचीनतम देश है | यह देश ऋषि मुनियों साधु संतों समाज-सुधारकों आदर्श-पुरुषों की भूमि है | इस देश का नाम 'भारत' दुष्यंत तथा शकुंतला के वीर पुत्र 'भारत' के नाम पर पड़ा | यह प्राचीन देश विश्व गुरु धरती का स्वर्ग , देवताओं की जन्म भूमि तथा प्रकृति की क्रीड़ा स्थली रहा है , दुनिया की अनेक संस्कृतियाँ मिट गई परन्तु भारत की संस्कृति आज भी जीवित है | भारत कभी सोने की चिड़िया था , परन्तु विदेशियों ने इसे लूटा तथा शासकों ने सैकड़ों वर्षों तक इसे गुलामी की जंजीरों में जकड़े रखा क्योंकि यहाँ के निवासी अपनी शक्ति , वीरता एकता को भूल बैठे थे | 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ तथा नए लोकतंत्र के रूप में उदित हुआ | इस भूमि में राम,कृष्ण,गाँधी,नानक, गुरु गोविन्द सिंह , विवेकानंद ,दयानंद ,महावीर स्वामी आदि अवतारों गुरुओं ने जन्म लिया | इसके इतिहास में चन्द्रगुप्त, चाणक्य और अशोक जैसे व्यक्ति हुए | सुभाष , भगत सिंह आज़ाद नेहरु जैसे आज़ादी के परवाने इसके लिए जिए और मरे हैं | इस देश में पंजाबी, गुजराती, राजस्थानी ,तेलगु , असमिया, बंगाली, मद्रासी , हिंदी भाषा भाषी लोग हैं | इसके उत्सव और त्यौहार , तीर्थ और पूजा स्थल , मंदिर और मस्जिद , चर्च और गुरूद्वारे इसकी एकता के सूत्र में माला के दोनों की भांति एक होते हैं |

नाम - पल्लवी देवी

एक बचपन का ज़माना था

एक बचपन का ज़माना था |
जिसमें खुशियों का खजाना था |
चाहत चाँद को पाने की थी |
पर दिल तितली का दीवाना था |
खबर न थी कुछ सुबह की |
न शाम का ठिकाना था |
माँ की कहानी थी
परियों का फ़साना था |
थककर आना स्कूल से |
पर खेलने भी तो जाना था |
बारिश में कागज़ की नाव थी |
हर मौसम सुहाना था |
क्यों हो गए हम इतने बड़े |
इससे अच्छा तो वो बचपन का ज़माना था |

करुण शर्मा
कक्षा - छठी

केन्द्रीय विद्यालय मेरा स्कूल

केन्द्रीय विद्यालय मेरा स्कूल
उसमें खिलते सुंदर फूल
अध्यापक हैं बड़े महान
देते हमको अपार ज्ञान
साथी मेरे प्यारे - प्यारे
जैसे आसमान के तारे
मेरा विद्यालय कितना प्यारा
मुझको लगता सबसे न्यारा !!!

युद्धवीर
कक्षा आठवीं

बेटी बचाओ

मैं भी लेती साँस हूँ ,
पत्थर नहीं इंसान हूँ !
कोमल मन हैं मेरा ,
वही भोला सा है चेहरा !
ज़जबातो में जीती हूँ !
बेटा नहीं बेटी हूँ !
कैसे दामन छुड़ा लिया,
जीवन के पहले ही मिटा दिया !
तुझसे बनी हूँ , बस
प्यार की भूखी हूँ !
जीवन पार लगा दूंगी ,
अपना लो में बेटा भी बन जाऊँगी !
दिया नहीं कोई मौका बस ,
पराया बना कर सोचा !
एक बार गले से लगालो ,
हर लड़ाई जीत कर दिखाऊँगी !
चंद लोगों की सुन ली तुमने !
मेरी पुकार ना सुनी !
मैं बोझ नहीं भविष्य हूँ
बेटा नहीं पर बेटी हूँ

तनीशा कटोच
कक्षा - आठवीं

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन सम्बन्धी प्रमुख नारे वचन

“वन्दे मातरम् |”	बंकिम चन्द्र चटर्जी
“हे राम |”	गाँधी जी
“ दिल्ली चलो|”	सुभाषचन्द्र बोस
“जय हिन्द |”	सुभाषचन्द्र बोस
“पूर्ण स्वराज |”	जवाहर लाल नेहरु
“सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा|”	इक़बाल
“जन-गण-मन अधिनायक जय है|”	रविन्द्रनाथ टैगोर
“इन्कलाब जिन्दाबाद |”	मौ. इकबाल
“स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है|”	बालगंगाधर तिलक
“सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है |”	राम प्रसाद बिस्मिल
“हिंदी,हिन्दू,हिन्दोस्तान|”	भारतेंदु हरिश्चंद्र
“तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा |”	सुभाषचन्द्र बोस
“वेदों की ओर लौटो |”	दयानंद सरस्वती
“आराम हराम है |”	जवाहरलाल नेहरु
“भारत छोड़ो |”	महात्मा गांधी
“विजयी विश्व तिरंगा प्यारा |”	श्यामलाल गुप्ता

विन्की भगत
संगणक अध्यापक

STAFF LIST OF KENDRIYA VIDYALAYA CHENANI 2017-18

PRINCIPAL – VACANT

PGTS REGULAR

1. MR. RAJEEV MAHAJAN [PGT ENG]
   (OFF. PRINCIPAL)
2. MS. RITA KUMARI [PGT CS]

PGTS [CONTRACTUAL]

1. MS. SHEETAL SHARMA [PGT HINDI]
2. MR. NAVAL GUPTA [PGT PHYSICS]
3. MR. SUSHMA DEVI [PGT CHEMISTRY]
4. MR. ABHINANDAN [PGT MATHS]
5. MR. RAJEEV MAHAJAN [PGT BIO]

MISC REGULAR

LIBRARIAN - MR. SHIV SHANKAR RAM

WET - MR. MANJEET SINGH

PRTS [REGULAR]

1. MS. GARIMA SHARMA
2. MS. POONAM YADA
3. MS. POONAM KUMARI
4. MS. SUMAN LATA

OFFICE STAFF

1. MR. BALBIR SINGH [SSA]
2. MR.NEK RAM [SS]
3. MR.SATISH PAL [SS]

TGTS [CONTRACTUAL]

1. MS. LACHHI DEVI [ENGLISH]
2. MS. BANDANA DEVI [SANSKRIT]
3. MS. ANITA KUMARI [HINDI]
4. MS. USHMA DEVI [MATHS]
5. MS. SURBHI KHAJURIA [SST]

PRTS [CONTRACTUAL]

1. MR. VINOD KUMAR
2. MS. SAKSHI SHARMA

COMPUTER TEACHER [CONTRACTUAL]

1. MR.VINKEY BHAGAT

MUSIC TEACHER [CONTRACTUAL]

1. MS. POONAM DEVI

SPORTS COACH [CONTRACTUAL]

1. **MR. VASEEM QAZI**

KENDRIYA VIDYALAYA CHENANI STAR PERFORMERS 2016-17

A). STAR PERFORMERS (STUDENTS)

CLASS -XII

1. KARISHMA KATOCH 461(92.20%)
2. ARYAN GUPTA 426 (85.20%)
3. UMAR FARIQ 403 (80.60%)

CLASS -X

1. SAKSHAM MAHAJAN (10 CGPA)
2. STUTI SHARMA (10 CGPA)
3. SIMRANJEET KOUR (9.8 CGPA)

B). STAR PERFORMERS (TEACHERS)

1. MS. RITA KUMARI (PGT CS) (100% RESULT IN IP, 92.86 PI IN CONCERNED SUBJECT CLASS XII)
2. MR. RAJEEV KUMAR MAHAJAN (PGT ENGLISH) (100% RESULT IN ENGLISH, 87.5 PI IN CONCERNED SUBJECT CLASS XII) (100% RESULT IN ENGLISH, 87.11 PI IN CONCERNED SUBJECT CLASS X)

C). STAR PERFORMERS (STAFF)

1. SH. BALBIR SINGH JAMWAL (SSA) (REGIONAL INCENTIVE AWARD)